आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 5 February, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - *आज सारा दिन फालो फादर करते चले*

श्रेष्ठ पुरुषार्थ के लिए हमें फालो फादर करना है। हमारे सामने ब्रह्मा बाबा का बहुत ही सुन्दर उदाहरण है।

जिन्होंने अपने जीवन में सर्वश्रेष्ठ त्याग किया। जिन्होंने गहन तपस्या की और स्वयं को महान बना लिया। आदर्श बना दिया। सर्वस्व समर्पित कर दिया। सम्पूर्ण वैराग्य जीवन में धारण कर लिया। और कर्म करते हुए सदा योगयुक्त रहने का बहुत एक आदर्श प्रस्तुत कर दिया हम सभी के समक्ष।

तो जैसा बाप वैसे बच्चे। जो ब्राह्मण यह समझते है ब्रह्मा बाबा हमारा अलौकिक पिता है। वह उस पिता के सारे संस्कार और धारणायें अपने जीवन में अपनायेंगे। तभी हम बाबा के सच्चे बच्चे कहलायेंगे।

बाबा का मुरली से बहुत प्यार था। जिन्हें बाबा से प्यार है उन्हें मुरली से बहुत प्यार होना चाहिए। बाबा अपने बच्चों को बहुत ऊँची नजर से देखते थे कि ....

" यह मेरे महान आत्मायें विश्व का कल्याण करने वाले है .. ईन्होंने ही भगवान को पहचाना है "

..... हम भी एक दुसरे को उसी महान दृष्टि से देखे .....

बाबा यदि कुछ शिक्षा देते थे तो पहले सभी को स्वमान में स्थित करते थे। फिर कुछ बातें करते थे। हम भी शिक्षायें आदेश के रूप में न दे। दुसरों को स्वमान में स्थित कराकर कुछ अच्छी बात सिखायें।

बाबा अपने काम को कभी पेन्डिंग नहीं रखते थे। आज का काम आज समाप्त कर देना। बाबा रोज सवेरे तीन बजे उठकर गहन तपस्या में मगन हो जाते थे। जिन्होंने बाबा को देखा उन्होंने देखा कि सोते समय बाबा गहन तपस्या में बैठे है। और जब उठे तो गहन तपस्या में है।

इसलिए बाबा और मम्मा के लिए शिवबाबा कह दिया ...

" उनका नींद का समय भी योग विना नहीं जाता है। तो क्योंकि वे योगयुक्त होकर ही सोते है। और योगयुक्त होकर ही उठ जाते है। उठते ही पुनः योगयुक्त हो जाते है "

तो हम ऐसे महान बाप के संतान है। जो अपने तपस्या के बल पर प्रजापिता ब्रह्मा बने। हम ऐसे महान बाप की संतान है जिसने गृहस्थ जीवन जी कर महान तपस्या करके अपने को सम्पूर्ण निर्विकारी बना दिया।

हम ऐसे महान पिता के संतान है जिसने सम्पूर्ण त्याग करके अपने त्याग को कभी स्मरण भी नहीं किया। दिखाया भी नहीं कि मैंने कोई त्याग किया है। जिसमें निमित्त भाव सदा अपने जीवन में धारण कर लिया।

हम भी अहम भाव को छोड़कर बाबा की तरह निमित्त भाव धारण कर ले। ब्रह्मा कभी स्वयं को यज्ञ के हेड नहीं समझे। वे कहते रहे ..

" शिवबाबा ही इस यज्ञ के मालिक है .. मैं तो उनके सेवाधारी हूँ .. मैं तो तुम बच्चों का भी मोस्ट ओविडियेन्ट सर्वेन्ट हूँ "

बहुत सादगी से बहुत निरहंकारिता से भरा जीवन, बहुत नम्रचित्त और संतुष्ट रहने की श्रेष्ठ धारणा, सदा प्रभु प्रेम में मगन जीवन .... जिससे उन्होंने गहन तपस्या का मार्ग अपनाया ...

यह सभी चीजें हमें अपने जीवन में फालो करनी है। तो जब भी ब्रह्मा बाबा के कक्ष में जाये उन्हें देखे तो उनसे कोई न कोई प्रेरणा ले फालो करने की।

चाहे .. वो कैसे तपस्या में बैठे है

चाहे ... उनकी दृष्टि में क्या है सबके लिए ..."**आत्मिक भाव .. कल्याण का भाव** "

चाहे ....वो कितने निरहंकारी थे ....

यह प्रेरणा लेकर बाबा के कमरे से वापिस आये।

चाहे .....

" उन्होंने संसार के लिए क्या क्या किया .. सब आत्माओं के लिए उन्होंने क्या क्या किया .. और कैसे विघ्न और बांधाओं को हँसते हँसते पार किया जिससे सिद्ध होता है कि वो बहुत शक्तिशाली थे "

तो आज सारा दिन हम फालो फादर को अपना लक्ष्य बनाते है। और हर घन्टे में एकबार बाबा का आह्वान करेंगे और फ़ील करेंगे ...

" बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org